Toppersnotes
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

सामाजिक विज्ञान

द्वितीय – प्रश्न पत्र

भाग – 3

लोकप्रशासन, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र व शिक्षण विधियाँ

SIERRA INNOVATIONS

RPSC 2ND GRADE – 2021

लोकप्रशासन, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र व शिक्षण विधियाँ

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	एक विषय के रूप में लोक प्रशासन का अर्थ, दायरा, प्रकृति विकास	1
2.	संगठन के सिद्धान्त	8
3.	प्रशासनिक व्यवहार निर्णय लेना, नैतिक, प्रेरणा	16
4.	भारतीय प्रशासन में मुद्दे – राजनीतिक और स्थायी के बीच संबंध, कार्यकारी, जर्नलिस्ट और विशेषज्ञ, लोगो की प्रशासन में भागीदारी	22
5.	नागरिकों की शिकायतों का निवारण लोकपाल, लोकायुक्त	26
समाजशास्त्र		
1.	समाजशास्त्र – अर्थ, प्रकृति एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य	28
2.	मौलिक अवधारणाएँ – समाज, सामाजिक समूह, प्रस्थिति तथा भूमिका, सामाजिक परिवर्तन	32
3.	जाति और वर्ग, अर्थ, विशेषताएँ, जाति और वर्ग में परिवर्तन	51
4.	वर्तमान सामाजिक समस्याएँ – जातिवाद, साम्प्रदायिकता, गरीबी, भ्रष्टाचार, एड्स	55
5.	वर्ण, आश्रम, धर्म, पुरूषार्थ, विवाह व परिवार की अवधारणा	60
अर्थशास्त्र		
1.	राष्ट्रीय आय की अवधारणा	71
2.	उपभोक्ता सन्तुलन और माँग एवं पूर्ति की अवधारणा	78

3.	मुद्रा, मुद्रा की परिभाषा एवं कार्य, व्यापारिक बैंक व केन्द्रिय बैंक के कार्य	88
4.	भारत का विदेशी व्यापार, वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण की अवधारणा	94
5.	भारत मे आर्थिक नियोजन एवं निर्धनता और बेरोजगारी	98
दर्शनशास्त्र		
1.	वैदिक व उपनिषद् दर्शन	102
2.	कार्टिशियन मैथड (कार्टीय विधि एवं सुकराती विधि)	108
3.	ग्रीक दर्शन – उपयोगितावाद, सुखवाद, कान्ट का दर्शन, संकल्प स्वतंत्रता, दण्ड के सिद्धान्त	111
4.	गीता के निष्काम कर्म एवं जैन धर्म की नैतिकता	119
शिक्षण विधियाँ		
1.	सामाजिक अध्ययन की प्रकृति, क्षेत्र, अवधारणा एवं उद्देश्य	123
2.	सामाजिक अध्ययन की पद्धतियाँ	127
3.	सामाजिक अध्ययन में कम्प्यूटर का महत्व	138
4.	सामाजिक अध्ययन शिक्षक के गुण, भूमिका, व्यावसायिक वृद्धि	139
5.	राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा रूप रेखा 2005, मापन एवं मूल्यांकन	141
6.	शिक्षण योजना – वार्षिक, इकाई, दैनिक, पाठ योजना	144
7.	उपलब्धि परीक्षण एवं ब्लूप्रिंट	148

लोक प्रशासन

लोक प्रशासन का एक विषय के रूप में अर्थ, प्रकृति, दायरा, विकास

अर्थ

- लोक प्रशासन एक अधिक व्यापक क्षेत्र का एक पहलू है। यह राजनीतिक निर्णय निर्माताओं द्वारा निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एक राजनीतिक व्यवस्था में मौजूद होता है।
- इसे सरकारी प्रशासन के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि लोक प्रशासन में लगे लोक का अर्थ ''सरकार'' होता है। इस प्रकार लोक प्रशासन का ध्यान लोक नौकरशाही पर अर्थात् सरकार के नौकरशाही संगठन पर केन्द्रित होता है।
- प्रशासन शब्द "Adminitration" शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। Adminitration शब्द लेटिन भाषा के Administrare शब्द से बना है जिसका अर्थ ''सेवा करना या व्यवस्था करना'' होता है।
- लोक प्रशासन में ''लोक'' शब्द का अर्थ 'जनता' लिया जाता था जो बाद में ''सरकार'' से लिया जाने लगा।
- प्रशासन शब्द अत्यन्त व्यापक दृष्टिकोण वाला शब्द है।

लुथर गुलिक

'' प्रशासन का संबंध कार्यों को पूरा करवाने और निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति कराने से है।''

हर्बर्ट साइमन

''व्यापक अर्थ में जो समूह सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सहयोग करते है उनके कार्यों को प्रशासन की संज्ञा दे सकते है।''

डिमॉक

''प्रशासन का संबंध के क्या और कैसे से है। क्या का अर्थ विषय–वस्तु है अर्थात् किसी क्षेत्र का तकनीकी ज्ञान जिससे एक प्रशासक अपने कार्यों को पूरा कराने में सक्षम हो।''

लोक प्रशासन की परिभाषाएँ

एल.डी. व्हाइट

''लोक प्रशासन में वे सभी कार्य आ जाते है जिनका उद्देश्य सार्वजनिक नीतियों को पूरा करना या लागू करना होता है।''

वुडरो विल्सन

'' कानून को विस्तृत एवं क्रमबद्ध रूप से क्रियान्वित करने का नाम ही लोक प्रशासन है। कानून को क्रियान्वित करने की प्रत्येक क्रिया एक प्रशासकीय क्रिया है।''

साइमन

'' साधारण प्रयोग में लोक प्रशासन का अर्थ राष्ट्रीय प्रान्तीय तथा स्थानीय सरकारों की कार्यपालिका शाखाओं की क्रिया से है।''

विलोब

''लोक प्रशासन उस कार्य का प्रतीक है जो सरकारी कार्यों के वास्तविक सम्पादन से संबंध होता है, चाहे वे कार्य सरकार की किसी शाखा से संबंधित ही क्यों ना हो।''

प्रशासन व लोक प्रशासन में अन्तर

	प्रशासन	लोक प्रशासन
1.	प्रशासन एक सामान्य संदर्भ का शब्द है जिसका क्षेत्र व्यापक है।	लोक प्रशासन एक विशिष्ट संदर्भ का शब्द है, जो सार्वजनिक नीतियों से ही संबंधित हैं। अतः इसका क्षेत्र सीमित या संकीर्ण है।
2.	इसका संबंध शासन के मुख्य कार्यों से है जो लोगों के माध्यम से कार्य करता है।	लोक प्रशासन दोहरे अर्थ वाला है, एक अर्थ में यह अध्ययन, अध्यापन, अनुसंधान का एक शैक्षणिक विषय है, दूसरे अर्थ में इसे एक क्रियाशील विज्ञान कहा जा सकता है।
3.	प्रशासन एक क्रिया और प्रक्रिया का द्योतक है।	लोक प्रशासन का संबंध राष्ट्र की नीतियों के निर्माण और उसके क्रियान्वयन से है।
4.	प्रशासन एक विश्वव्यापी प्रक्रिया है जो समुदाय, राज्य, राष्ट्र, सामाजिक संगठनों सभी में होती है।	लोक प्रशासन का संबंध केवल सार्वजनिक प्रशासन से होता है।
5.	प्रशासन वांछित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सामूहिक रूप से किया जाने वाला कार्य होता है।	लोक प्रशासन में सरकारी क्रियाकलापें होती है।
6.	प्रशासन के अन्तर्गत लोक प्रशासन और निजी प्रशासन दोनों शामिल होते है।	लोक प्रशासन, राष्ट्र की नीतियों, लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को लोक हित एवं प्रशासनिक संगठनों के द्वारा किया जाने वाला सामूहिक प्रयास है।

- वुडरो विल्सन अमेरिका के प्रिस्टन विश्वविद्यालय मे राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर थे।
- विल्सन ने 1887 में "Political Science Quartarly" नामक पत्रिका में "The Study of Administration" लेख लिखा।
- विल्सन के इस लेख से लोक प्रशासन का उद्भव माना जाता है।
- विल्सन ने लोक प्रशासन के एक अलग विषय के रूप में माँग की।

लोक प्रशासन की प्रकृति

लोक प्रशासन की प्रकृति के विश्लेषण के संबंध में दो दृष्टिकोण प्रचलित है–

1. एकीकृत दृष्टिकोण
2. प्रबन्धकीय दृष्टिकोण

एकीकृत दृष्टिकोण

- यह दृष्टिकोण व्यापक है। इसके समर्थकों के अनुसार निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सम्पादित की जाने वाल प्रक्रियाओं का समग्रीकरण या योग ही प्रशासन है।
- इस दृष्टिकोण के अनुसार किसी भी संगठन की उच्चतर से लेकर निम्नतर तक जो भी गतिविधियाँ होती वे सब लोक प्रशासन की प्रकृति में शामिल है।

एल. डी. व्हाइट

''लोक प्रशासन उन सभी कृत्यों से मिलकर बना है जिनका प्रयोजन लोक नीति को पूरा करना या उसे लागू करना होता है।''

समर्थक

एल.डी. व्हाइट, फिफनर, मार्क्स, डिमॉक आदि।

प्रबन्धकीय दृष्टिकोण

यह दृष्टिकोण संकुचित है। केवल उन्हीं लोगों के कार्यों को प्रशासन मानता है जो किसी उपक्रम संबंधी केवल प्रबन्धकीय कार्यों को सम्पन्न करते है। उस दृष्टिकोण के अनुसार संगठन में उच्च स्तर पर होने वाली गतिविधियाँ ही लोक प्रशासन की प्रकृति में शामिल है।

लुथर गुलिक

''प्रशासन का संबंध कार्य पूरा किये जाने और निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति से है।''

समर्थक

गुलिक, साइमन, स्मिथबर्ग, थॉमसन आदि।

नोट– लोक प्रशासन की प्रकृति को दोनों दृष्टिकोण एक–दूसरे के विपरीत नहीं है क्योंकि लोक प्रशासन एकीकृत दृष्टिकोण की प्रबन्धकीय गतिविधियों को भी शामिल करता है।

लोक प्रशासन का क्षेत्र

लोक प्रशासन के क्षेत्र के संबंध में भी विद्वानों मे एकमत नहीं है क्योंकि लोक प्रशासन एक गतिशील और विकासशील विषय है। इसलिए इसे विद्वानों ने अलग–अलग दृष्टिकोण में देखा और समझा।

लोक प्रशासन के क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित दृष्टिकोण प्रचलित है।

1. व्यापक दृष्टिकोण
2. संकुचित दृष्टिकोण
3. पोस्डकोर्ब दृष्टिकोण
4. लोक कल्याणकारी दृष्टिकोण
5. पोकोक दृष्टिकोण
6. आधुनिक दृष्टिकोण

1. व्यापक दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण में सरकार के तीनों अंग– व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका द्वारा सम्पादित कार्यों का अध्ययन किया जाता है।

इसके अनुसार लोक प्रशासन के क्षेत्र में वे सभी क्रियाकलाप आते है जिनका प्रयोजन लोक नीति को पूरा करना या उसे लागू करना होता है।

समर्थक

विलोबी, मार्क्स, व्हाइट, नीग्रो आदि।

2. संकुचित दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण के अनुसार लोक प्रशासन का संबंध शासन की केवल कार्यपालिका शाखा से है। प्रशासन में संगठन के सभी कार्यों को सम्मिलित नहीं करते केवल उन्हीं कार्यों को शामिल करते है जिनका संबंध प्रबंध की विधियों, तकनीकों, पद्धतियों से होता है और जो सभी संगठनों में सामान्य रूप से पाये जाते है।

समर्थक

साइमन, गुलिक, सियोन, विल्सन, गुडनॉव आदि।

3. पोस्डकोर्ब दृष्टिकोण (POSDCORB)

यह विचार लुथर गुलिक ने दिया। पोस्डकोर्ब शब्द अंग्रेजी के 7 अक्षरों से मिलकर बना।

POSDCORB

P = Planning (योजना बनाना)
O = Organising/Organisation (संगठन)
S = Staffing (कर्मचारियों की व्यवस्था करना)
D = Directing/Direction (निर्देशन करना)
Co = Coordination (समन्वय करना)
R = Reporting (प्रतिवेदन करना/प्रति–पुष्टि)
B = Budgeting (बजट तैयार करना)

गुलिक व उर्विक ने Papers on the Cience of the Administration नामक पुस्तक 1937 में प्रकाशित की जिसमें POSDCORB का उल्लेख किया गया है।

4. लोक प्रशासन के क्षेत्र का लोक–कल्याणकारी दृष्टिकोण

- इस दृष्टिकोण को आदर्शवादी दृष्टिकोण भी कहा जाता है।
- इस दृष्टिकोण में राज्य और प्रशासन के बीच अन्तर नहीं मानते है। उनका विचार है कि राज्य एक लोक कल्याणकारी अवधारणा है। अतः राज्य और प्रशासन दोनों ही लोक कल्याणकारी है तथा दोनों का लक्ष्य ही है– ''सब का जनहित''

समर्थक

एल.डी. व्हाइट, मर्सन, ड्रोट है।

5. पोकोक दृष्टिकोण (POCCOC)

यह अवधारणा हेनरी फेयोज ने दी।

P = Planning (नियोजन करना)
O = Organisation (संगठन)
C = Commanding (आदेश देना)
Co = Coordination (समन्वय करना)
C = Controlling (नियन्त्रण करना)

6. आधुनिक दृष्टिकोण

साइमन व गुलिक ने इसे परम्परागत दृष्टिकोण की संज्ञा दी।

नवीन लोक प्रबन्ध

- इंग्लैण्ड की तत्कालीन प्रधानमंत्री माग्रेट थेचर ने सरकार का घाटा कम करने के लिए निजीकरण को बढ़ावा दिया तथा संविदा पर भर्ती प्रारम्भ की।
- सरकारी अधिकारियों को निजी क्षेत्र की तरह व्यवहार करने पर बल दिया जिसे ''थेचरवाद'' कहा गया।
- इसे ही अमेरिका में ''रिगनोमिक्स'' कहा गया।
- लोक प्रषासन में इसे नवीन लोक प्रबन्धन कहा गया।
- नवीन लोक प्रबन्धन शब्द को प्रयोग 1991 में क्रिस्टोफर हुड ने किया।
- ऑस्बार्न व गोब्लर को नविन लोक प्रबन्ध का जनक कहा जाता है। इन्होनें 1992 में "Reinveting Government" नामक पुस्तक लिखी।

इस पुस्तक में निम्न सिद्धान्त बताये गये हैं–

- बाजारोन्मुखी सरकार : सरकार भी बाजार के अनुरूप लाभ कमाने के लिए कार्य करती है।
- ग्राहकोन्मुखी सरकार : जनता को एक ग्राहक के रूप में मानते हुए व्यवहार करना।
- **उत्प्रेरक सरकार :** प्रशासनिक अधिकारियों को समस्याओं का इन्तजार नहीं करना है बल्कि समस्याओं की कल्पना कर पहले से ही उनका समाधान तैयार रखना चाहिए।

SMART Government :
S = Simple
M = Model
A = Accouontable (जबाबदेही)
R = Responsible (उत्तरदायी)
T = Transparent (पारदर्शी)

3Es :
E = Economy (मितव्यय)
E = Efficiency (दक्षता)
E = Effectiveness (प्रभावशीलता)

समाजशास्त्र

अर्थ, प्रकृति, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

18वीं शताब्दी के मध्य में यूरोप में हो महत्वपूर्ण घटनाऐं घटित हुई –

1. फ्रांसीसी क्रांति
2. औद्योगिक क्रांति

- जिससे समाज में आर्थिक, राजनैतिक, बौद्धिक परिवर्तन हुए जिन्हें सम्मिलित रूप से प्रबोध काल कहा गया।
- इन परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप समाज में नये संगठन व व्यवस्था के लिए नये विज्ञान की आवश्यकता महसूस की गयी।
- सर्वप्रथम फ्रांस निवासी सेन्ट साइमन ने सोशियल बायोलॉजी नामक पुस्तक की रचना की।
- अगस्त कॉम्ट ने सोशियल फिजिक्स नामक पुस्तक की रचना की।
- 1838 में जिसे समाजशास्त्र नाम दिया गया।
- अगस्त कॉम्ट ने पॉजिटिव फिलोसोफी में 1836 में समाजशास्त्र शब्द का प्रयोग किया।
- "Sociology" शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। Socius (सोशियस) लैटिन भाषा का तथा Logus (लोगस) ग्रीक भाषा का शब्द है।

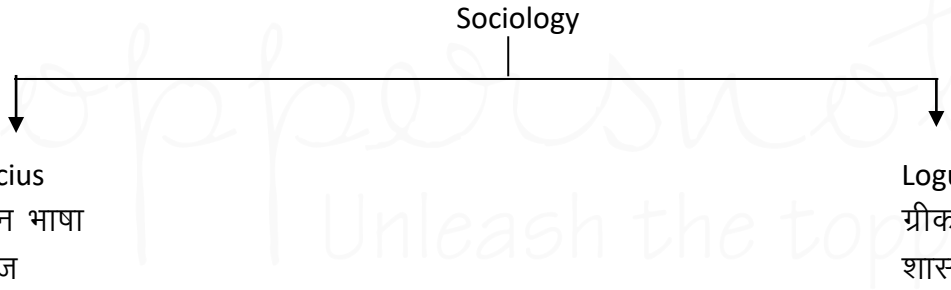

- शाब्दिक अर्थ – समाज का विज्ञान / समाज का शास्त्र
- जे.एस. मील ने समाजशास्त्र को दो भाषाओं की अवैध सन्तान कहा है।
- बीयर स्टीड – समाजशास्त्र का अतित बहुत लम्बा है लेकिन इतिहास बहुत ही छोटा है।
- जे.एस. मील ने समाजशास्त्र शब्द के स्थान पर Ethology शब्द के प्रयोग का सुझाव दिया।
- समाजशास्त्र शब्द को प्रचलन में लाने का श्रेय हरबर्ट स्पेन्सर को जाता है।
- पुस्तक – The Principle of Sociology में।
- मैक्स वेबर द्वारा अपनी पुस्तक प्रोटेंस्टेट एथिक्स एंड स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म में अर्थव्यवस्था के विकास में धर्म की भूमिका का उल्लेख किया।

समाजशास्त्र का विकास

उद्भव – 1838 में अगस्त कॉम्ट के द्वारा
अध्ययन – 1876 में यू.एस.ए. येल विश्व विद्यालय में पढाया गया।
प्रथम अध्यापक – समनर

पुस्तक – Folk ways

- 1889 में फ्रांस में बोर्डिक्स विश्व विद्यालय में प्रथम प्रोफेसर – दुर्खीम
- 1907 में इंग्लैण्ड में

भारत में विकास

- 1914 में बम्बई विश्वविद्यालय में नागरिक शास्त्र पढ़ाया गया।
- 1917 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र (Economics) के साथ पढाया गया।
- 1919 में औपचारिक रूप से बम्बई में स्वतंत्र विभाग की स्थापना की गई।
  प्रथम अध्यक्ष – सर पेट्रिक गेड्स
- समाजशास्त्र का भारत में जनक जी.एस. धुर्ये को माना जाता है तथा दूसरे अध्यक्ष बने।
- 1921 में लखनऊ विश्वविद्यालय में – राधाकमल मुखर्जी
- 1952 बम्बई में भारतीय समाजशास्त्रीय परिषद् का गठन किया तथा जी.एस. धुर्ये अध्यक्ष बने।

परिभाषाएँ

- के. डेविस – ''समाजशास्त्र मानव समाज का विज्ञान है।''
- वार्ड/ओडम – ''समाजशास्त्र समाज का अध्ययन है।''
- मैकाइवर एवं पेज – ''समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों का जाल है।''
- कॉम्ट – ''समाजशास्त्र व्यवस्था एवं प्रगति का विज्ञान है।''
  ''समाजशास्त्र सामाजिक स्थैतिकी एवं सामाजिक गतिकी का विज्ञान है।
- दुर्खीम – समाजशास्त्र सामाजिक तथ्यों का विज्ञान है।
  समाजशास्त्र सामूहिक विधान का विज्ञान है।
- जॉनसन – '' समाजशास्त्र सामाजिक समूहों का विज्ञान है।''
- सीमेल – समाजशास्त्र मानवीय अन्तः संबंधों के स्वरूपों का विज्ञान है।
- हॉब हाऊस – समाजशास्त्र मानव मस्तिष्क की अन्तः क्रियाओं का विज्ञान है।

समाजशास्त्र की प्रकृति

- समाजशास्त्र के प्रारम्भिक विचारक अगस्त कॉम्ट, दुर्खीम, बीयर स्टीड समाजशास्त्र को विज्ञान बनाने के पक्षधर थे।
- कार्ल पियर्सन – सभी विज्ञानों की एकता उसकी वैज्ञानिक पद्धति से है न कि विषयवस्तु से।
- स्टुअर्ट चेज – विज्ञान का संबंध अध्ययन से है न कि उसकी विषय वस्तु से।

वैज्ञानिक अध्ययन की विशेषताएँ

1. समस्या का चुनाव
2. उपकल्पना का निर्माण
3. वर्गीकरण
4. अवलोकन

5. विश्लेषण
6. सामान्यीकरण
7. भविष्यवाणी

विज्ञान की विशेषताएँ

1. वस्तुनिष्ठता
2. मूल्य तटस्थता
3. कार्य कारणता
4. सत्यापन शीलता
5. सैद्धान्तिक
6. आनुभाविकता
7. संचयी प्रकृति

- सी.डब्ल्यू ने अपनी पुस्तक ''सोशियोलॉजी इमेजिनेशन'' में समाजशास्त्र के विज्ञान होने का खण्डन किया।
  (i) समाजशास्त्र में प्रयोगशाला का अभाव है।
  (ii) समाजशास्त्र की भविष्यवाणी सही नहीं होती। अतः समाजशास्त्र विज्ञान की अपेक्षा कला अधिक है।
- बीयर स्टीड ने समाजशास्त्र को सामाजिक, प्रत्यक्षवादी, विशुद्ध, आनुभाविक एवं सैद्धान्तिक विज्ञान कहा।
- कॉम्ट ने समाजशास्त्र को प्रत्यक्षवादी कहा।
- जॉनसन ने समाजशास्त्र विज्ञान की 4 विशेषताएँ बताई –
  1. अनुभव आश्रित है।
  2. नीति निरपेक्ष है।
  3. एक संचयी विषय है।
  4. सिद्धांतबद्ध है।

नोट – समाजशास्त्र एक विज्ञान है क्योंकि पद्धांतिक है।

समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

- परिप्रेक्ष्य शब्द अंग्रेजी के Perspective (पर्सपेक्टिव) शब्द से बना है।
- Perspective (पर्सपेक्टिव) शब्द लैटिन भाषा के पर्सपेक्ट से बना है। जिसका अर्थ है Seen through अर्थात् उपर से नीचे तक देखना।

  जब कोई विषय वैज्ञानिक किसी घटना का विशेष दृष्टिकोण से अध्ययन करे तो इसे परिपेक्ष्य कहा जाता है।

  ई. चिनोय ने ब्रेड के उदाहरण से परिपेक्ष्य को समझाया।
- एन.के. सिधि ने एक कुर्सी का उदाहरण देते हुए समझाया कि जिस प्रकार अर्थशास्त्री उसके लाभ–हानि, मूल्य के अध्ययन करेगा तथा एक राजनीतिक वैज्ञानिक उसे सत्ता एवं शक्ति के दृष्टिकोण से जबकि एक समाजशास्त्री उस कुर्सी को प्रतिष्ठा के प्रतीक के रूप में देखेगा।

विशेषताएँ

1. परिप्रेक्ष्य की प्रकृति वैज्ञानिक है।
2. सामाजिक संबंधों की जटिल व्यवस्था का अध्ययन किया जाता है।
3. सामाजिक व्यवस्था का भी अध्ययन
4. सामाजिक यथार्थ, प्रस्थिति मूल्यों का अध्ययन
5. सामाजिक अव्यवस्था का अध्ययन

मौलिक अवधारणाएँ

- समाजशास्त्र में ''समाज'' की अवधारणा का विशिष्ट अर्थ में प्रयोग किया जाता है इसका तात्पर्य मानव समाज से है जिसमें व्यक्ति–व्यक्ति, व्यक्ति समूह और एक समूह के दूसरे समूह से पाये जाने वाले सामाजिक संबंध महत्वपूर्ण है।
- मेकाइवर एवं पेज – ''समाज सामाजिक संबंधों का जाल है।'
  ''समाज रितियों एवं कार्य प्रणालियों की अधिकार सत्ता व पारस्परिक जागरूकता के अनेक समूहों एवं श्रेणियों के मानव व्यवहार के नियंत्रणों एवं स्वतंत्रताओं की जटिल व्यवस्था है।
- समाज सामाजिक संबंधों से निर्मित एक जटिल व्यवस्था है। जो निरंतर परिवर्तनशील है।

परिभाषाएँ

- पारसंस – समाज मानवीय संबंधों की वह जटिल व्यवस्था है। जो साध्य–साधन संबंधों द्वारा क्रियारत रहते है।
- गिडिंग्स – समाज वह संघ या संगठन है, जो औपचारिक संबंधों का योग है। इसमें भाग लेने वाले व्यक्ति परस्पर पर एक–दूसरे से जुड़े रहते है।
- जॉनसन – समाज को मूर्त रूप में परिभाषित किया व सामाजिक समूह से निर्मित माना।
- रयूटर – समाज एक अमूर्त अवधारणा है जो एक समूह के सदस्यों के मध्य पाये जाने वाले पारस्परिक संबंधों की जटिलता का बोध कराती है।

समाज की विशेषताएँ

1. समाज अमूर्त है।
2. समाज में समानता एवं विभिन्नता पायी जाती है।
3. समाज में सहयोग एवं संघर्ष पाया जाता है।
4. समाज परिवर्तनशील व जटिल इकाई है।
5. समाज मनुष्यों तक ही सीमित नहीं है।
6. अन्योन्याश्रितता पर आधारित है।
7. सामाजिक संबंधों से निर्मित है।

मैकाइवर एवं पेज – जहाँ कहीं जीवन है वहीं समाज है (सोसायटी)
सामाजिक संबंध – दीर्घकालीन अंतःक्रिया के परिणाम स्वरूप निर्मित संबंध जिनमें भावनात्मक निकटता तथा पारस्परिक जागरूकता पायी जाती हो सामाजिक संबंध कहलाते है।

- सामाजिक संबंध सहयोग के कारण निर्मित होते है तथा संघर्ष के कारण परिवर्तित होते है।
- सामाजिक संबंध समानता के कारण निर्मित होते है।

गिडिंग्स – सामाजिक संबंधों का आधार सजातीय की एकता को माना।

- जॉनसन ने समाज के लिए चार तत्वों को आवश्यक माना –
  1. निश्चित क्षेत्र
  2. प्रजनन
  3. स्वतंत्रता
  4. संस्कृति

राष्ट्रीय आय

राष्ट्रीय आय से तात्पर्य

- किसी अर्थव्यवस्था में एक निश्चित वित्तीय वर्ष (भारत में सामान्य 01 अप्रैल से 31 मार्च तक) के दौरान उत्पादित अन्तिम वस्तुओं अथवा पूर्ण निर्मित वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य को राष्ट्रीय आय (National Income) कहा जाता है।
- राष्ट्रीय आय एक दिए हुए समय में किसी अर्थव्यवस्था की उत्पादन शक्ति को मापती है। भारत में राष्ट्रीय आय गणना **केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (Central Statiscal Organissation CSO)** द्वारा की जाती है।

भारत में राष्ट्रीय आय गणना का इतिहास

- भारत में सर्वप्रथम राष्ट्रीय आय के संदर्भ में अनुमान 1868 ई. में **दादाभाई नौरोजी** द्वारा उनकी पुस्तक **पॉवर्टी एण्ड अनबिट्रिश रूल इन इण्डिया** में व्यक्त किये गये। दादाभाई नौरोजी ने प्रतिव्यक्ति वार्षिक आय 20 बताई थी। 1925–29 में **डॉ. वी.के.आर.वी. राव** ने सर्वप्रथम वैज्ञानिक विधि से राष्ट्रीय और राष्ट्रीय लेखा प्रणाली की गणना की।

राष्ट्रीय आय समिति

वर्ष 1948–49 में **प्रो. पी.सी. महालनोबिस** की अध्यक्षता में **राष्ट्रीय आय समिति (National Income Committee)** की नियुक्ति हुई, जिसकी अनुशंसा पर राष्ट्रीय आय संबंधित लेखा प्रणाली का ढाँचा स्थापित हुआ तथा केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन की स्थापना की गई। राष्ट्रीय आय समिति ने अपनी प्रथम रिपोर्ट वर्ष 1951 में तथा अन्तिम रिपोर्ट वर्ष 1954 में प्रस्तुत की।

राष्ट्रीय आय की गणना

राष्ट्रीय आय की गणना के माध्यम से अर्थव्यवस्था की वास्तविक क्षमता का पता चलता है कि इसके माध्यम से अर्थव्यवस्था की उपलब्धियों का भी मूल्यांकन किया जा सकता है। राष्ट्रीय आय की गणना द्वारा अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्रों के लिये प्राथमिकता तय करने एवं इनके बीच संतुलन स्थापित करने संबंधी उपायों में सहायता मिलती है। राष्ट्रीय आय की गणना द्वारा गरीबी निवारण एवं रोजगार सृजन कार्यक्रम (Rozgaar Creation Programme) के लक्ष्य निर्धारण तथा मुद्रा स्फीति के संबंध में वास्तविक स्थिति का पता लगाने में सहायता मिलती है।

इसके साथ ही सरकार की वास्तविक राजस्व प्राप्ति एवं खर्चे के संबंध में भी सही अनुमान लगाया जा सकता है। राष्ट्रीय आय का अनुमान का प्रथम सरकारी आंकलन वर्ष 1948 – 49 में वाणिज्य मंत्रालय के द्वारा जारी किया गया है।

राष्ट्रीय आय की गणना से संबंधित सावधानियाँ

राष्ट्रीय आय की गणना के लिये निम्न सावधानियों का रखना आवश्यक है

- अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों का जोडा जाना चाहिये।
- उत्पादक प्रक्रिया में सम्मिलित मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्यों को नहीं जोडा जाना चाहिये।
- राष्ट्रीय आय की गणना साधन लागत पर की जानी चाहिए। उपभोग एवं पूँजीगत दोनों वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों को जोडा जाना चाहिए।
- सेवानिवृत्ति पेंशन को राष्ट्रीय आय में सम्मिलित नही किया जाता है, क्योंकि राष्ट्रीय आय की परिभाषा के अनुसार, यह किसी वर्ष विशेष में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं का योग होती है।

राष्ट्रीय आय में निम्न मदों को शामिल नही किया जाता

- **हस्तान्तरण भुगतान (Transfer Payment)** ऐसे भुगतान किसी सेवा या उत्पादन के बदले प्राप्त नही होते। मुख्यतः सामाजिक सुरक्षा हेतु भुगतान, जैसे – पेंशन आदि।
- **पूँजीगत लाभ (Capital Gains)** यह वस्तुओं एवं सेवाओं के वास्तविक उत्पादन की बजाय बाजार के स्फीतिकारी प्रभावों के कारण प्राप्त आय है।
- **गैर कानूनी (Unlawful Gains)** गतिविधियों से प्राप्त आय को शामिल नही किया जाता, क्योंकि एक ओर तो गैर कानूनी होने के कारण, वहीं दूसरी ओर इनका मापन भी व्यावहारिक रूप से संभव नही है।
- **निषिद्ध वस्तुओं (Prohibited Items)** अफीम आदि के उत्पादन को गणना में शामिल नहीं किया जाता है।
- **पुरानी वस्तुओं की खरीद एवं बिक्री (Sale and Purchase of old Objects)** को भी राष्ट्रीय आय में शामिल नही किया जाता, क्योंकि इनका उत्पादक किसी दूसरे वर्ष हुआ था और वहाँ इनकी गणना की जा चुकी होती है।

राष्ट्रीय आय मापन की विधियाँ

राष्ट्रीय आय की लेखांकन संबंधी अवधारणा सर्वप्रथम साइमन कुजनेटस द्वारा प्रतिपादित की गई, जिन्हानें राष्ट्रीय आय के मापन की तीन विधियों को प्रस्तुत किया है। इसकी तीन विधियाँ निम्नलिखित है –

1. उत्पाद पद्धति

उत्पाद पद्धति को वस्तु सेवा विधि के नाम से भी जाना जाता है। इसके अन्तर्गत यह आंकलन किया जाता है कि अन्तिम उत्पाद में प्रत्येक उद्योग ने अलग – अलग क्या योगदान दिया।

2. आय पद्धति

आय पद्धति के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय का आंकलन उत्पाद कारकों के लिये भुगतान के आधार पर किया जाता है। अन्य शब्दों में राष्ट्रीय आय की गणना के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों तथा व्यवसायिक उपक्रमों की शुद्ध आय का योग प्राप्त किया जाता है।

राष्ट्रीय आय = (कुल लगान – भूमि से प्राप्त आय) + (कुल मजदूरी – श्रम से प्राप्त आय) + (कुल ब्याज – पूँजी से प्राप्त आय) + (कुल लाभ – उद्यमी को प्राप्त आय)

3. व्यय पद्धति

व्यय पद्धति के अनुसार, कुल आय या तो उपभोग पर व्यय की जाती है अथवा बचत पर। अतः राष्ट्रीय आय, कुल उपभोग व्यय तथा कुल बचत का योग होती है ।

राष्ट्रीय आय = कुल अपभोग + व्यय कुल बचत

राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित अवधारणाएँ

राष्ट्रीय आय की गणना के संबंध में मूलतः दो अवधारणाओं – राष्ट्रीय उत्पाद तथा घरेलू उत्पाद को आधार स्वरूप लिया जाता है। शेष सभी धारणाओं पर आधारित इनके प्रतिरुप स्वरूप है। राष्ट्रीय आय से संबंधित समग्र अवधारणाओं को निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया जाता है।

सकल घरेलू उत्पाद

देश की घरेलू सीमा के अन्तर्गत एक वर्ष (भारत के संदर्भ में 01 अप्रैल से 31 मार्च) में उत्पादित सभी अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं को मौद्रिक मूल्य के योग को सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product GDP) कहा जाता है। सकल घरेलू उत्पाद में कुछ भाग उन विदेशियों की उत्पादक सेवाओं का परिणाम हो सकता है, जिन्होनें अपनी पूँजी तथा तकनीकी ज्ञान का उपयोग करके देश के कुल उत्पादन में कुछ योगदान दिया है। अतः इसके अन्तर्गत देश की भौगोलिक सीमा के अन्दर विदेशियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं को सम्मिलित किया जाता है। सकल घरेलू उत्पाद के अन्तर्गत निम्न उत्पादकों को सम्मिलित किया गया है, जो निम्न प्रकार है –

- **बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद**
  देश की सीमा के अन्तर्गत निवासी और गैर – निवासी उत्पादक इकाईयों द्वारा बाजार मूल्य पर व्यक्त मूलवर्द्धनों का योग या सम्पूर्ण अत्यन्त वस्तुओं तथा सेवाओं का बाजार मूल्य पर व्यक्त मूल्य ही बाजार की कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद कहा जाता है।

- **साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद**
  बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद तथा साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद के मध्य में अन्तर पाया जाता है, तथा परोक्ष कर तथा सब्सिडी की मात्रा या निवल राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product, NMP) के कारण होती है।

- **वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद**
  किसी भी वस्तु के उत्पादन एवं उपभोग के दौरान उसका मूल्य ह्रास होता है। यह मूल्य ह्रास एक तरह से पूँजी स्टॉक की खपत होती है। जब सकल आय में मूल्य ह्रास को घटाया जाता है, तो निवल अथवा शुद्ध राशि प्राप्त होती है। वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (Real Gross Domestic Product, GDP) सकल घरेलू उत्पाद (Net National Product, NMP) का एक सही माप है, जिसमें मूल्य ह्रास को घटाकर माप लिया जाता है।

- **सांकेतिक सकल घरेलू उत्पाद**
  मुद्रास्फीति (Inflation) या अपस्फीति (Deflation) के कारण बाजार मूल्य में होने वाले वार्षिक परिवर्तन को सांकेतिक (Nominal) सकल घरेलू उत्पाद में शामिल करते है। सांकेतिक सकल घरेलू उत्पाद का मूल्यांकन बाजार के वर्तमान मूल्य पर करते है।

क्रय शक्ति समता विधि

क्रय शक्ति समता विधि (Purchasing power parity, (PPP) Method) का प्रयोग सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (International Monetary Fund, IMF) द्वारा वर्ष 1988 में विभिन्न देशों के रहन–सहन स्तर के निर्धारण हेतु किया गया। इस विधि में किसी देश विशेष की सकल राष्ट्रीय आय को, देश के अन्दर मुद्रा की क्रय शक्ति के आधार पर ज्ञात किया जाता है। GDP को क्रय शक्ति समता विधि द्वारा भी मापा जाता है। सांकेतिक सरल घरेलू उत्पाद को ही इस स्थिति में प्रयोग में लाते है। क्रय शक्ति समता के आधार पर भारत विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था है।

भारत में सकल घरेलू उत्पाद गणना

आमतौर पर एक देश में सकल घरेलू उत्पाद की गणना राष्ट्रीय सांख्यिकी ऐजेन्सी करती है। भारत में सकल घरेलू उत्पाद की गणना केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा की जाती है। सकल घरेलू उत्पाद के **अन्तर्राष्ट्रीय मानक राष्ट्रीय लेखा प्रणाली** (1993) से प्राप्त किये जाते है, जो अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन, यूरोपीय आयोग तथा संयुक्त राष्ट्र द्वारा संकलित किये जाते है। भारत में सकल घरेलू उत्पाद गणना निम्न आधारों पर की जाती है –

- **सकल मूल्य योजित**
  इसका अनुमान कारक लागत के स्थान पर मूल कीमतों पर किया जाता है। सकल मूल्य योजित (Gross Value Added, GVA) माप को सकल उत्पादक सब्सिडी में प्रत्यक्ष बिक्री कर को घटाकर प्रस्तुत करते है।

- **सकल राष्ट्रीय उत्पाद**
  किसी देश के नागरिकों द्वारा एक निश्चित समयावधि सामान्यतः एक वर्ष में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product, GNP) का जाता है।
  इसके मापन के लिए सकल राष्ट्रीय उत्पाद में से भारत राज्य क्षेत्र के अन्दर विदेशियों द्वारा अर्जित आय को घटा दिया जाता है तथा विदेशों में भारतीयों द्वारा अर्जित आय को जोड दिया जाता है।

- **निवल घरेलू उत्पाद**
  जब सकल घरेलू उत्पाद में से उत्पादन की प्रक्रिया में से प्रयुक्त मशीन और पूँजी के मूल्य में आई कमी (मूल्य ह्रास) को घटा दिया जाता है, तो इसे निवल घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product, NDP) कहते है। NDP में विदेशों से प्राप्त आय शामिल नही की जाती।

- **निवल राष्ट्रीय उत्पाद**
  सकल राष्ट्रीय उत्पाद में जब उत्पादन की प्रक्रिया में प्रयुक्त मशीन और पूँजी के मूल्य में आई कमी को घटा दिया जाता है, तो इसे निवल राष्ट्रीय उत्पाद या शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product, NNP) कहा जाती है।

- **वास्तविक राष्ट्रीय आय**
  किसी देश में राष्ट्रीय आय की वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को वास्तविक राष्ट्रीय आय (Real National Income , RNI) कहते है। इसे आर्थिक वृद्धि के सूचक के रुप में प्रयुक्त किया जाता है।

- **वैयक्तिक आय**
  घरेलू क्षेत्र द्वारा प्राप्त आय को ही वैयक्तिक आय (Personal Income) कहते है। यह देशवासियों द्वारा वास्तव में प्राप्त आय है।

राष्ट्रीय आय की अन्य अवधारणाएँ

राष्ट्रीय आय की अन्य अवधारणाएँ निम्नवत् है।

- **प्रति व्यक्ति आय**
  सामान्यतः प्रति व्यक्ति आय को आर्थिक वृद्धि के मापन के लिये स्वीकार किया जाता है। इसका उपयोग किसी देश के अन्दर जीवन स्तर का अनुमान लगाने के लिये किया जाता है। इसके द्वारा किसी अन्य देश की तुलना में किसी एक देश के लोगों की सम्पत्ति का अनुमान लगाते है। आमतौर पर इसको किसी सर्वमान्य अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा जैसे यूरो या डॉलर में मापा जाता है।

  $$\text{प्रति व्यक्ति आय} = \frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{कुल जनसंख्या}}$$

- **वास्तविक प्रतिव्यक्ति आय**
  स्थिर मूल्य पर राष्ट्रीय आय आंकलन के पश्चात् जब देश की कुल जनसंख्या से विभाजित करने पर जो परिणाम मिलता है, उसे ही वास्तविक प्रतिव्यक्ति आय (Real Per Capita Income, RPCI) कहते है।
  वास्तविक प्रतिव्यक्ति आय

  $$\text{आय} = \frac{\text{स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय}}{\text{कुल जनसंख्या}}$$

राष्ट्रीय आय के आंकलन की सीमाएँ

राष्ट्रीय आय के आंकलन की व्यवहार सीमाएँ निम्नलिखित है : –

- राष्ट्रीय उत्पादन मापते समय साधारणतया यह मान लिया जाता है कि उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं से मुद्रा का विनिमय होता है।
- भारत में जहाँ निर्वाह कृषि जाती है, वही उपज का काफी भाग विक्रय के लिये बाजार में नही आ पाता। इस भाग को उत्पादक या तो उपभोग के लिये रख लेते है या अन्य वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय में से उसे दूसरे उत्पादकों को दे देते है।
- ऐसे उत्पादों का अनुमानित मूल्य जोडा जाता है। भारत में असंगठित क्षेत्र में अनेक लघु, कुटीर एवं घरेलू उत्पादक है, जो लेखे नहीं बनाते। अतः इनकी वास्तविक आय न लेकर एक अनुमानित आय को ही जोड़ा जाता है। भारत में उद्योगों के अनुसार राष्ट्रीय आय के आँकड़े शामिल करने की प्रवृत्ति है। इस प्रकार यह आवश्यक है कि उत्पादकों विभिन्न व्यवसाय वर्गों में रखा जाए।
- भारत में काले धन के विषय में सार्वजनिक वित्त एवं नीति संस्थान के अनुसार, काली आय 18 प्रतिशत से 21 प्रतिशत है, जो काली अर्थव्यवस्था के रूप में कार्य करती है। यह आय रिकॉर्ड नहीं की जाती, इस कारण राष्ट्रीय आय की गणना त्रुटिपूर्ण हो जाती है।

राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित भारत के संगठन

राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित भारत के संगठन निम्न प्रकार है –

- **केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन**

  केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (Central Statical Organisation) सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय का एक भाग है। भारत में राष्ट्रीय आय का अनुमान केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा किया जाता है। इसकी स्थापना 02 मई, 1951 में केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के सचिवालय में की गई। केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन का मुख्यालय नई दिल्ली के वार्षिक प्रकाशन को राष्ट्रीय लेखा (National Accounts Statistics) के नाम से जाना जाता है। इसकी **औद्योगिक सांख्यिकी शाखा का मुख्यालय कोलकाता में है।** यद्यपि इसका प्रारम्भ सन् 1949 में ही एक सांख्यिकी इकाई के रूप में किया गया था। केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा वर्ष सन् 1956 से प्रतिवर्ष राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी पत्रिका प्रकाशित की जाती है। केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा भारत को राष्ट्रीय आय के आंकलन हेतु अर्थव्यवस्था को तीन क्षेत्रों में **कुल 11 उपक्षेत्रों** में विभाजित किया गया है।

- **राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन**

  वर्ष 1950 में प्रो. पी सी महालनोबिस की अनुशंसा के आधार पर राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (National Sample Survey Oranisation NSSO) की स्थापना भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के अन्तर्गत की गई। वर्ष 1970 में इसका पुनर्गठन किया गया तथा जनवरी, 1971 में राष्ट्रीय प्रतिदर्श/नमूना सर्वेक्षण संगठन की स्थापना की गई। इसका कार्य सर्वेक्षण (Survey) तक ही सीमित है। इसका मुख्यालय कोलकाता में स्थित है।

- **राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग**

  सी रंगराज समिति द्वारा वर्ष 2000 में दिए गये सुझाव के आधार पर 01 जून, 2005 को स्थायी सांख्यिकी आयोग (Statistical Commission) गठित किया गया। **12 जुलाई, 2006 को प्रो. सुरेश तेन्दुलकर की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग (National Statistaical Commission, NSC) ने कार्य प्रारम्भ किया।** राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग की स्थापना के साथ ही राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (National Sample Survey Organisation, NSSO) का कार्य लगभग समाप्त हो चुका है, किन्तु NSSO द्वारा आर्थिक सर्वेक्षण का कार्य अब भी जारी है।

वैदिक एव उपनिषद दर्शन – मूल अवधारणाएँ

वैदिक काल में धर्म को ही दर्शन कहा जाता था।

वेद

- वेद शब्द ''विद्'' धातु से बना है जिसका अर्थ है – जानना या ज्ञान प्राप्त करना।
- वेदों के भाष्यकार भास्क व सायण थे।
- वैदिक ज्ञान को साक्षात तपोबल के द्वारा सर्वप्रथम ऋषि–मुनियों ने सुना। इसी ज्ञान को ऋषि मुनियों ने मौखिक रूप से आगे बढ़ाया इस कारण वेदों को श्रुतिग्रंथ कहा जाता है।
- वेदों को अपौरुवेय भी कहा जाता है।
- वेदों को संहिता ग्रंथ भी कहा जाता है।

1. ऋग्वेद

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त है।
- वैदिक ज्ञान को ईश्वरीय ज्ञान माना जाता है।
- इस कारण वेदों के मंत्रों को रचने वाले के लिए दृष्टा शब्द काम में लिया जाता हैं।
- **ऋत्विज–** यज्ञ के समय वेदों के ज्ञान का उच्चारण करने वालों के लिए ऋत्विज कहा गया।
- ऋग्वेद का ऋत्विज होता या होतृ कहलाते थे।

2. यजुर्वेद

- इससे यज्ञ की विधियों का उल्लेख मिलता है।
- यजुर्वेद गद्य व पद दोनों मे रचित है।
- यजुर्वेद का ऋत्विज अर्ध्वयु कहलाता है।
- यजुर्वेद की पाँच शाखाएँ है – काठक, कपिष्ठल, मैत्रायणी तेतरेय, वाजसनेयी

3. सामवेद

- संगीत का प्रचीनतम ग्रंथ है।
- सामवेद का ऋत्विज उद्गाता कहलाता है।
- सामवेद की शाखाएँ कौयूम, रामायणीय, जैमिनीय है।

4. अथर्ववेद

- तांत्रिक क्रिया का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है।
- इस वेद को अथर्वा अंगिरस वेद भी कहा जाता है।
- वेद की शाखाएँ – सोनक व पिपलाद है।
- त्रिवेद – ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद
- वेदत्रयी – यहाँ त्रयी का अर्थ विद्या से है। तीन वेदों में बतलाई गयी विद्या वेदत्रयी कहलाती है।
- ऋक विद्या, यजु विद्या, साम विद्या
- त्रेविद्य – तीन वेदों का ज्ञाता
- त्रिवर्ग – धर्म, अर्थ, काम
- प्रस्थानत्रयी – उपनिषद, ब्रह्मसूत्र, गीता

ब्राह्मण ग्रन्थ

- इन्हें वेदों की टिकाए भी कहा जाता है।
- अर्थर्ववेद का ब्राह्मण ग्रंथ – गोपल ब्राह्मण ग्रंथ
- ऋग्वेद का ब्राह्मण ग्रंथ – एतरैय व कोषितकी
- यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रंथ – तैतरैय व शतपथ ब्राह्मण
- सामवेद के ब्राह्मण ग्रंथ – पंचविश, षडविंश, जैमिनीय

उपनिषद्

- वैदिक साहित्य का द्विविध विभाजन
- कर्म काण्ड– वेद – ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक ग्रंथ
- ज्ञान काण्ड – उपनिषद्

पूर्ववैदिक काल धार्मिक जीवन

1. प्राकृतिक शक्तियों का दैवीकरण
2. देवताओं का मानवीकरण

देवताओं का वर्गीकरण

प्रमुख देवता

इन्द्र – ऋग्वेद में इन्द्र का 250 बार उल्लेख मिलता हैं।
इन्द्र को वर्षा का देवता माना गया। प्रमुख रूप से युद्ध के देवता थे।

अग्नि – इन्हें अतिथि देवता के रूप में भी जाना जाता है।
ऋग्वेद में अग्नि को भुवनचश्रु कहा गया।

वरूण – वरूण शब्द 'वर' धातु से बना है जिसका अर्थ है – ढकने वाला।
वरूण को आकाश का देवता भी कहा जाता है।
ऋग्वेद में वरूण का 144 बार उल्लेख है।
वरूण को नैतिकता का देवता भी माना जाता है।
वरूण को ऋतस्य गोप अर्थात् ऋत का संरक्षक भी माना जाता है।

सोम – ऋग्वेद का सम्पूर्ण 9वाँ मण्डल इस देवता को समर्पित है। सोम एक प्रकार की वनस्पति है।
इस देवता का निवास स्थान हिमालय पर्वत की मुजवन्त चोटी को बताया गया है।

आर्यों के धार्मिक विकास के चरण

1. बहुदेववाद
2. एकेश्वरवाद
3. एकतत्ववाद

मैक्समूलर ने तीन चरण बताये

1. बहुदेववाद
2. एक–एक अधिदेववाद (हीनोथीज्म)
3. एकेश्वरवाद

हीनोथीज्म – उपासना करते समय सभी देवी–देवताओं में से किसी एक को मन में प्रधान मानने की भावना।
एकतत्ववाद – एकतत्ववाद के दो रूप मिलते हैं।

1. **सवैश्वरवाद्र–** इस विचार धारा के अनुसार सम्पूर्ण सत्ता ही ईश्वर ही सम्पूर्ण सत्ता है।
2. **कुटस्थवाद–** इस विचारधारा के अनुसार परमतत्व एक है वहीं प्राणी जगत, भौतिक जगत में अभिव्यक्त हुआ है। ऋग्वेद में परम तत्व के लिए **तदैकम** शब्द का उल्लेख मिलता है।

काल का धार्मिक जीवन

- इस काल में आर्यों का धार्मिक जीवन जटिल व **आडम्बरपूर्ण** व यज्ञ प्रधान हो गया।
- इस काल को वेदवाद का युग भी कहा जाता है।
- इस काल में ब्रह्म विष्णु, शिव प्रमुख देवता बन गये।
- इसी काल में पंच महायज्ञ व त्रिऋण की अवधारणा का विकास हुआ।

वैदिक सूत्र

- अत्यन्त संक्षिप्त व सार गर्भित वाक्यों को सूत्र कहा जाता है। वैदिक सूत्र तीन प्रकार के होते है।
  (1) **श्रोत सूत्र** – इसमें सार्वजनिक पूजा का उल्लेख मिलता है।
  (2) **गृह सूत्र** – इसमें घर–परिवार से संबंधित नियम मिलते हैं।
  (3) **धर्म सूत्र** – इसमें वर्ण आश्रय व पुरुषार्थ से संबंधित बातों की जानकारी मिलती हैं।

उपनिषद दर्शन या वेदान्त दर्शन

- उपनिषद का शब्दिक अर्थ है निकट निष्ठापूर्वक बैठना अर्थात् गुरू के समीप निष्ठापूर्वक बैठना। भारत में सर्वप्रथम दार्शनिक विचारधार का उल्लेख उपनिषदों में मिलता हैं।
- ब्रह्मा विचारधारा व मोक्ष का भी सर्वप्रथम उल्लेख उपनिषदों में मिलता है।
- उपनिषदों की संख्या 108 मिलती हैं।
- शंकराचार्य ने प्रमुख उपनिषद 11 माने जाते है।

प्रमुख उपनिषद

1. **वृहदारण्यक उपनिषद**– इस उपनिषद में याज्ञवलक्य व गार्मी संवाद के मिलता है।
2. **ईशावस्य उपनिषद**– इस उपनिषद में नैतिकता से संबंधित बातें बतायी गयी।
3. **केन उपनिषद**– इस उपनिषद को ब्राह्मण उपनिषद व तत्वकार उपनिषद भी कहा जाता है।
4. **कुढोपनिषद्**– इस उपनिषद में **यम व निचिकेता** के संवाद का उल्लेख है।
5. **छान्दोग्य उपनिषद**– इस उपनिषद में **उध्दालक** व **श्वेतकेतु** सवांद के द्वारा ब्रह्मा व आत्मा की एकता को बताया गया है।
   - दार्शनिक चिन्तन का चर्म उत्कर्ष उपनिषदों में मिलता है।

उपदेश

- शंकराचार्य के अनुसार उपनिषदों से तात्पर्य है ब्रह्म ज्ञान जो समस्त प्रकार के अज्ञान को समाप्त कर देता है।
- डायसन ने 60 उपनिषदों का जर्मन भाषा मे अनुवाद किया था।
- उपनिषदों में कर्म काण्डों की आलोचना की गयी हैं।
- मुण्डकोपनिषद में यज्ञ को टूटी हुई नोका बताया गया है।
- उपनिषद ज्ञान मार्गी है।

आत्मा – शंकराचार्य के अनुसार आत्मा वह तत्व है जो सभी में व्यापत है। आत्मा प्रत्येक स्थिति में समान रहता है।

आत्मा की अवस्था– माण्डुक्य उपनिषद में आत्मा की चार अवस्थाओं का उल्लेख मिलता हैं।

1. **जागृत अवस्था–** यह आत्मा की पहली अवस्था है। इस अवस्था को वैश्वानर भी कहा जाता है। इस अवस्था मे चेतना का विषय बाह्य जगत के पदार्थ होते है।
2. **स्वपन अवस्था–** यह आत्मा की दूसरी अवस्था है। इस अवस्था को तेजस भी कहा जाता है। इस अवस्था में चेतना के विषय आन्तरिक होते हैं।
3. **सुसुप्त अवस्था–** यह आत्मा की तीसरी अवस्था है। इसे प्राज्ञ भी कहा जाता है। इस अवस्था में चेतना के विषय ना तो आन्तरिक होते व बाह्य होते हैं।
4. **तुरीय अवस्था–** तुरीय शब्द का अर्थ चौथी से लिया जाता है इस अवस्था में आत्मा को अपने वास्तविक रूप का पता चल जाता है।

आत्मा के कोष

तैतरेय उपनिषद में आत्मा के पाँच कोष बताए गए।

1. **अनमय कोष–** यह आत्मा का प्रथम कोष है स्थूल शरीर को अन्नमय कोष कहते है।
2. **प्राणमय कोष–** अन्नयम कोष के भीतर प्राणमय कोष स्थित है। यह शरीर को गति देने वाली शक्तियों पर निर्भर है।
3. **मनोयय कोष–** प्राणमय कोष के भीतर मनोमय कोष स्थित है। यह मन पर निर्भर करता है।
4. **विज्ञानमय कोष–** मनोमय कोष के भीतर विज्ञानमय कोष स्थित है। जो वृद्धि पर निर्भर करता है।
5. **आनन्दमय कोष–** विज्ञानमय कोष के आनन्दमय कोष है। इस कोष में ज्ञाता व ज्ञय का भेद विद्यमान नहीं रहता है।

ब्रह्मा विचार

उपनिषदों मे परम तत्व, परम सत्य, को ब्रह्मा कहा गया है। ब्रह्मा वह तत्व है जिसे सभी जड़ व चेतन मय पदार्थ को उत्पन्न होते हैं।

1. **सप्रपंच ब्रह्मा–** जिसे हम लोग सामान्य भाषा में ईश्वर कहते हैं। उसे ही उपनिषदों में सप्रपंच ब्रह्मा कहा गया छान्दोगय उपनिषद में सप्रपंच ब्रह्मा को तज्जलान कहा गया है।
2. **निष्प्रञपच ब्रह्मा–** ब्रह्मा का वास्तविक स्वरूप असीम निर्गुण है। उसे ही निष्प्रञपच ब्रह्मा कहा गया। **वृहदारण्यक** उपनिषद में इस ब्रह्मा की सत्ता का वर्णन करते हुए नेति–नेति कहा गया।

उपनिषदों में लिखे चार महावाक्य

उपनिषद	वाक्य
छान्दोग्य	ततत्वर्मास (तु वहीं है)
वृहदारण्यक	अहं ब्रह्मस्मी (मैं ब्रह्मा हूँ)
माण्डुक्य	अयमात्मा (यह आत्मा ब्रह्मा है)
ऐतरैय	प्रज्ञान ब्रह्मा (ब्रह्मा ज्ञान स्वरूप है)

आत्मा व जीव

- आत्मा पर जब अज्ञान का आवरण पड जाता है तो आत्मा अपने आप को जीव के रूप में अनुभव करती है। आत्मा का सम्पर्क जब शरीर इन्द्रियों, मन व बुद्धि के साथ हो जाता है। तो आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर अपने अप को जीव के रूप मे अनुभव करती है।
  जीव अज्ञानी है जबकि आत्मा ज्ञानी है।

- उपनिषदों मे मोक्ष प्राप्ति के लिए श्रवण, मनन, ध्यान को अपनाकर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।
  उपनिषदों के अनुसार मोक्ष आनन्द की स्थिति हैं। उपनिषदों के अनुसार मोक्ष कोई नवीन प्राप्ति नहीं है यह तो प्राप्तस्य प्राप्ति है।

भूमा – उपनिषदों में परम तत्व के लिए भूमा शब्द भी काम में लिया जाता है।

दर्शनशास्त्र मे ज्ञान प्राप्ति के 6 स्त्रोत बताए हैं–

1. प्रत्यक्ष
2. अनुभाव
3. शब्द
4. उपमान
5. अर्थोत्पत्ति
6. अनुपलब्धि

भारतीय दर्शन का विभाजन

1. दर्शन को वेदों को मानने व नहीं मानने के आधार पर आस्तिक व नास्तिक दर्शन में विभाजित किया जाता हैं।
   (i) **आस्तिक**
   सांख्य – कपिलमुनि
   वैशेषिक – कणाद
   न्यायदर्शन – गौतम
   योग दर्शन – पतंजलि
   मीमांस दर्शन – जैमिनी
   वेदान्त दर्शन – बादरायण

   (ii) **नास्तिक दर्शन**– जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, चावार्क दर्शन

2. ईश्वर को मानने व ना मानने के आधार पर

(i) आस्तिक – वैशेषिक, न्याय, योग, वेदान्त

(ii) नास्तिक – जैन, बौद्ध, चावार्क, सांख्य, मीमांस

- चावार्क दर्शन को लोकायत दर्शन भी कहा जाता है।
- चावार्क को निकृष्ट शिरोमणी कहा जाता है।
- चावार्क ने अर्थ व काम को ही मानता है।
- चावार्क ने अर्थ को साधन व काम को साध्य माना है।

सामाजिक अध्ययन की प्रकृति, क्षेत्र और अवधारणा, शिक्षण के उद्देश्य

अर्थ एवं प्रकृति

- मानव को आधार मानकर किया गया अध्ययन सामाजिक अध्ययन कहलाता है।
- मानवीय परिपेक्ष्य में किया गया समाज का अध्ययन सामाजिक अध्ययन कहलाता है।
- किसी भी देश की उन्नति या अवनति वहाँ की सामाजिक व्यवस्था पर निर्भर करती है।
- सर्वप्रथम 1892 में अमेरिका में सामाजिक अध्ययन की शुरूआत की गई।
- सामाजिक अध्ययन की प्रकृति एकीकृत या सलयनकारी है।

सामाजिक अध्ययन की शुरूआत

- 1892 – अमेरिका में शुरूआत की गई।
- 1911 – समाजशास्त्र विषय जोडा गया।
- 1916 – संवैधानिक मान्यता दी गई।
- 1921 – राष्ट्रीय परिषद् की स्थापना की गई।
- 1934 – सामाजिक अध्ययन आयोग की स्थापना।
- 1952 – 53 माध्यमिक शिक्षा आयोग की स्थापना।
- 1955 – स्वतंत्र विषय के रूप में मान्यता दी गई।

परिभाषाएँ

- यू.एस.ए परिषद् – "सामाजिक अध्ययन मानव समाज के संगठन तथा विकास से संबंधित है।"
- राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् – सामाजिक अध्ययन मनुष्यों तथा अपने वातावरण के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन है।"
- पीटर लुईस – "सामाजिक विज्ञान उन नियमों से संबंध रखते है जो मनुष्य के समाज एवं सामाजिक विकास को संचालित करते है।"
- बेस्ले – सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन दोनों मानवीय संबंधों की विवेचना करते है।
- एम.पी.मुफात – सामाजिक अध्ययन ज्ञान का वह क्षेत्र है जो युवको को आधुनिक सभ्यता को समझने में सहायता करता है।
- रेवलिस – विज्ञान अन्तः चेतना के अभाव में आत्मा का हनन करती है।

सामाजिक अध्ययन की विशेषता

1. सामाजिक अध्ययन मानव एवं उसके संबंधों का अध्ययन करता है।
2. यह मानवीय संबंधों पर बल देता है।
3. सामाजिक शिक्षा के आधुनिक दृष्टिकोण का प्रतिपादन करता है।
4. सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए एक नवीन आधार प्रदान करता है।
5. सामाजिक अध्ययन हमारे दैनिक जीवन पर विश्व की घटनाओं का अध्ययन करता है।
6. सामाजिक अध्ययन विद्यार्थियों को वातावरण समझने में सहायता प्रदान करता है।
7. सामाजिक अध्ययन समग्र ज्ञान का क्षेत्र है।
8. सामाजिक अध्ययन विषय वस्तुओं का एकीकरण रूप है।

9. सामाजिक अध्ययन में अतीत एवं वर्तमान घटनाओं का अध्ययन किया जाता है।
10. यह अध्ययन मानव के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन करता है।
11. सामाजिक अध्ययन मानव व उसके भौतिक पर्यावरण का अध्ययन करता है।
12. सामाजिक अध्ययन विषयों की सापेक्षता पर बल देता है।

सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन में अन्तर

सामाजिक विज्ञान	सामाजिक अध्ययन
1. इसकी विषय–वस्तु का बौद्धिक स्तर उच्च होता है।	1. सामाजिक अध्ययन की विषय–वस्तु निम्न होती है।
2. सामाजिक विज्ञान व्यस्कों के लिए है।	2. सामाजिक अध्ययन बालकों के लिए।
3. इसका क्षेत्र विस्तृत है।	3. इसका क्षेत्र संकुचित है।
4. यह सैद्धांतिक है।	4. यह व्यवहारिक है।

शिक्षा में सामाजिक अध्ययन का महत्व

1. विभिन्न सामाजिक आदतों एवं कुशलताओं का अध्ययन करना।
2. व्यक्ति को सामाजिक पर्यावरण में व्यवस्थित होने में समर्थ बनाना।
3. समाज की प्रगति के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।
4. सामाजिक जीवन को सफल एवं उन्नत बनाने में उपयोगी।
5. सामाजिक जागरूकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में सहायक।
6. व्यक्ति की मानसिक एवं सामाजिक शक्तियों के विकास में सहायक।
7. विद्यार्थियों में शारीरिक स्वास्थ्य का दृष्टिकोण विकसित करने में सहयोगी।
8. सहयोगी भावना विकसित करने में सहायक।
9. व्यवहारिक समस्याओं के समाधान में सहायक।
10. व्यक्तियों को उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने में सहायक है।
11. सामाजिक अध्ययन समाज में एकरूपता एवं दृढ़ता लाने में सहायक है।
12. सामाजिक अध्ययन संस्कृति एवं विरासत के प्रति श्रद्धा प्रकट करता है।

सामाजिक अध्ययन के शिक्षण उद्देश्य

ब्लूम ने शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण किया

1. ज्ञानात्मक उद्देश्य –

- 1956 में
- इसका संबंध बच्चों के कक्षा–कक्ष शिक्षण से होता है।
- इसके निम्न पद है–
  ज्ञान, अवबोध, ज्ञानोपयोग, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन

2. भावत्मक उद्देश्य –

- 1964 में करथवाल ने प्रर्वतन किया।
- इसका संबंध बच्चों की रूचि एवं भावनाओं से होता है।
- इसके निम्न पद है – ग्रहण, अनुक्रिया, अनुमूलन, प्रत्यक्षीकरण, व्यवस्थापन, चरित्र निर्माण

3. **क्रियात्मक उद्देश्य –**
    - 1969 में सिंपसन ने प्रवर्तन किया।
    - इसका सम्बन्ध बच्चे की मानसिक एवं शारीरिक क्रियाओं से होता है।
    - इसके निम्न पद है–
    - उद्दीपक, कार्य करना, नियंत्रण, समायोजन, संभावीकरण, आदत निर्माण।

NCERT के अनुसार शिक्षण उद्देश्य

1. ज्ञान – पहचान करना, तथ्य, नियम, सूत्र, परिभाषा, सिद्धान्त।
2. अवबोध – उदाहरण देना, व्याख्या करना, वर्गीकरण करना, विश्लेषण, संश्लेषण, सूची बनाना।
3. ज्ञानोपयोग – ज्ञान का दैनिक जीवन में उपयोग करना, प्रयोग करना, निष्कर्ष निकालना, निर्णय लेना।
4. कौशल – चित्र बनाना, मॉडल बनाना, ग्लोब बनाना, चार्ट बनाना, ग्राफ बनाना।
5. अभिरूचि – जीवनियाँ पढ़ना, साहित्य पढ़ना, औरों की मदद करना।
6. अभिवृत्ति – सकारात्मक, आशावादी, धनात्मक, वैज्ञानिक।

नोट – शिक्षण का 4H सूत्र – गाँधी जी ने दिया – (Health, Hand, Head, Heart)

सामाजिक अध्ययन–शिक्षण के मूल्य

1. उच्च आदतों एवं कृतियों का विकास
2. विभेद एव चयन करने में सहायक
3. सामाजिक कुशलता
4. मानसिकता का विकास
5. आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक
6. व्यवहारिक उपयोगिता
7. स्वतंत्र अध्ययन का विकास

समाजिक अध्ययन का पाठ्यक्रम

- पाठ्यक्रम शब्द अंग्रेजी के Curriculum शब्द से बना है जो लैटिन भाषा के Currere शब्द से बना है जिसका अर्थ है "दौड का मैदान" पाठ्यक्रम निर्देशात्मक होता है।
- क्रो & क्रो – "पाठ्यक्रम में विद्यार्थी के विद्यालय एवं विद्यालय के बाहर के अनुभव सम्मिलित है। इसमें बालकों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक विकास में सहायक है।"
- मुनरो – "पाठ्यक्रम में वे समस्त अनुभव निहित है जिनको विद्यालय में शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक है।"
- माध्यमिक शिक्षा आयोग – "पाठ्यक्रम में वें समस्त विद्यालय की क्रियाएँ शामिल है जो एक शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य व शिक्षार्थी के वातावरण में शामिल है।
- पाठ्यवस्तु/पाठ्यचर्या – पाठ्यचर्या का रूप व्यापक है। पाठ्यचर्या में पाठ्यक्रम शामिल है। पाठ्यचर्या का निर्माण शैक्षिक एजेन्सियों द्वारा किया जाता है जिसमें विद्यालय की सम्पूर्ण इकाईयों को शामिल किया जाता है। पाठ्यचर्या में शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों की क्रियाएँ शामिल होती है।

प्रमुख आयोग

1. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग – 1948–49 डॉ. सर्वपल्ली – राधाकृष्णन आयोग
2. माध्यमिक शिक्षा/मुदालियर आयोग – 1952–53
3. कोठारी आयोग/शिक्षा आयोग – 1964–66
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986
5. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा – 2005
6. नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020

पाठ्यचर्या प्रक्रिया के निम्न भाग है

1. पाठ्यक्रम के उद्देश्य विकसित करना।
2. विषय–वस्तु का चयन करना।
3. विषय–वस्तु का संगठन करना।
4. अधिगम प्रक्रिया शामिल करना।
5. उपलब्धियों का विकास करना।

पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त

1. मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त
2. सामाजिक सिद्धान्त
3. अनुभव आधारित सिद्धान्त
4. परिपक्वता का सिद्धान्त
5. संबंधों के स्पष्टीकरण का सिद्धान्त
6. समस्याओं के चयन का सिद्धान्त
7. उपयोगिता का सिद्धान्त
8. अवधारणात्मक उपागम का सिद्धान्त
9. विविधता एवं लचिलेपन का सिद्धान्त

महत्वपूर्ण तथ्य

1. नागरिकता शिक्षा के उद्देश्य के लिए मानव संबंधों से संबंधित अनुभव और ज्ञान का एकीकरण है – बैरेल
2. शिक्षण विद्यालय की आत्मा है – बाइनिंग व बाइनिंग
3. सामाजिक विज्ञान में तीन प्रकार के सहसंबंध पाये जाते है।

सामाजिक अध्ययन पद्धति

परियोजना (Project) –

- अमेरिका के शिक्षा शास्त्री जॉन ड्यूबी के शिष्य किलपैट्रीक ने इस विधि का निर्माण किया। यह विधि जॉन ड्यूबी के प्रयोजवाद पर आधारित है।
- **किलपैट्रीक** – "प्रोजेक्ट वह उद्देश्यपूर्ण कार्य है जो पूर्ण मनोयोग के साथ सामाजिक वातावरण में किया जाता है।"
- **स्टीवेंसन** – "प्रोजेक्ट एक समस्यामूलक कार्य है जो अपनी स्वभाविक परिस्थितियों में पूर्णता को प्राप्त करता है।"
- **बेलार्ड** – "योजना वास्तविक जीवन का एक छोटा सा अंश है जिसे विद्यालय में सम्पादित किया जाता है।"

प्रोजेक्ट विधि के सिद्धान्त –

1. उद्देश्यों का सिद्धान्त
2. क्रियाशीलता का सिद्धान्त
3. स्वतंत्र वातावरण का सिद्धान्त
4. उपयोगिता का सिद्धान्त
5. अनुभवशीलता का सिद्धान्त
6. वास्तविकता का सिद्धान्त

प्रोजेक्ट विधि के सोपान –

- इस पद्धति में किसी उद्देश्यपूर्ण क्रिया द्वारा विधार्थी को निम्न चरणों से गुजरना होता है –
  1. परिस्थिति उत्पन्न करना।
  2. योजना का चुनाव करना।
  3. योजना/कार्यक्रम बताना।
  4. योजना का क्रियान्वय न करना।
  5. योजना का निर्णय/मूल्यांकन करना।
  6. योजना का लेखा–जोखा रखना।

प्रोजेक्ट विधि के प्रकार –

रचनात्मक प्रोजेक्ट | रसास्वादन प्रोजेक्ट | समस्यात्मक प्रोजेक्ट | अभ्यास प्रोजेक्ट